: पाँचवाँ अध्याय :

उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों की नायिकाओं का मनोविज्ञान

: पाँचवाँ अध्याय :

उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों की नायिकाओं का मनोविज्ञान

प्रस्तावना :

प्रायः मनोविज्ञान में मनुष्य के मन का अध्ययन किया जाता है। इस संसार में संपन्न होनेवाले सभी कार्यों का मूल आधार मानव का हृदय और मस्तिष्क है। मानव के मन का आन्तरिक पक्ष उसके कार्य को दिशा प्रदान करता है। बहुतसी शारीरिक व्याधियों का कारण कोई न कोई मानसिक या भावनात्मक स्थिति होती है। डॉ.देवराज उपाध्याय के नुसार "मानव के प्रति मानव की चिंता को समझने, समझाने, देखने, बूझने के प्रयत्न को मनोविज्ञान का अध्ययन कहते हैं।"[१] इसमें मानव के कार्यआपार और उसकी प्रतिक्रियाओं का अध्ययन होता है।

मानव जीवन का उद्देश्य आत्मज्ञान प्राप्त करना है। मानव अपने अंतर्मन में एक जिज्ञासा वृत्ति लेकर जन्मता है। मनुष्य अपेन अस्तित्व का रहस्य खोजने के लिए आत्मा की खोज करता है। आत्मा की खोज करते हुए ही भावों और मनोवेगों का अध्ययन मनोविज्ञान के अंतर्गत होता है। साहित्य के अनेक विषयो में से मनोविज्ञान एक दिखाई देता है। साहित्यिक को मानव स्वभाव की पूरी जानकारी होती है। साहित्यिक कृति में अगर मनोविज्ञान नहीं है तो वह कृति प्रभावहीन बन सकती है। साहित्य में मानव के भावों और मनोविकारों को प्रथम स्थान देना पडता है।

मनुष्य के अंतर्मन में चलनेवाला मानसिक क्रिया-कलापही उसे दुःखी, निराश, कुण्ठित बना देता है। अश्कजी के नाटक भी समाज का ही प्रतिबिंबित रूप होने से उनके नाटकों की नायिकाओं की मनोदशा का प्रभावपूर्ण चित्रण हमें दिखाई देता है। अश्क ने

---

१. डॉ.देवराज उपाध्याय आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान पृ - ४०

नाटकों में मनोविज्ञान को केंद्र मानकर लेखन नहीं किया है परंतु नायिकाओं की सहज प्रवृत्तियों का चित्रण मनोदशा, अहं, काम और कुण्ठा के रूप में किया है।

५.१ नायिका की मनोदशा -

भावुकता नारी की नैसर्गिक प्रवृत्ति है। नारी कितनी भी कठोर क्यों न बन जाये, कर्तव्य के लिए त्याग क्यों न करे परंतु उसका अन्तर्मन कहीं-न-कहीं उसकी अपूर्ण ईच्छाओं से द्वंद्व करता रहता है। "जय-पराजय" की नायिका बड़ी रानी एक राजपूतानी है। वह अपने कर्तव्य को निभाना अधिक महत्वपूर्ण मानती है। उसके पुत्र चंड के हठ पर उसके पति राणा लक्षसिंह हंसाबाई से दूसरा विवाह करते है। रानी पुत्र को दी गयी सीख के अनुसार खुद भी मर्यादा और कुल की प्रतिष्ठा का पालन करती है परंतु स्त्री सुलभ भावना के नुसार उसके अन्तर्मन पर चोट लगी है। मेवाड़ के राजा राणा लक्षसिंह की पत्नी, राज्य की रानी और वह भी राजपूतानी होने के नाते वह अपने दुःख को किसी के सामने प्रकट न करते हुए भावनाओं का दमन करती है। एक नारी होने से उसकी भावनाएँ उसकी छोटी बेटी सुकेशी के माध्यम से प्रकट होती हैं। बड़ी रानी एक दिन सुकेशी को हंसाबाई के महल के पीछे उद्यान में लेकर जाती है। उससे बातें करते-करते वह जैसे अपने आप ही कहती है "कितनी बार मैं यहाँ अँधेरे में आकर बैठी हूँ। कितनी रातें मैंने यहाँ जाग कर काट दी हैं।।"[१] पति का वृद्धावस्था में कर्तव्य के लिए दूसरी शादी करना वह समझती है फिर भी एक स्त्री होने से वह अपनी व्यथा को सह नहीं पाती है।

सुकेशी छोटी होने से हंसाबाई के महल मे हमेशा जाती है। वहाँ अपने पिता लक्षसिंह और छोटी माँ हंसाबाई की बाते वह सुनती है। बड़ी रानी सुकेशी से पूछती है "कभी वे मेरे सम्बन्ध में भी बातें करते हैं।"[२] बेटी के "नहीं" कहने पर रानी शून्य में खो जाती है और कहती है "मैं उतर गयी हूँ, उनकी याद से उतर गयी हूँ,

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क जय-पराजय पृ - ९१

२. - वही - पृ - ९२

अपने शिखर से उतर गयी हूँ।"[१] पति का शादी के बाद रानी से कम मिलना, उसे याद न करना उसके मन को यातना पहुँचाता है। वह मन ही मन में घुटती नजर आती है। वह सुकेशी से कहती है "वसन्त की हवा, पतझड की बयार - मेरे लिए अब इन दोनों मे कोई अंतर नहीं, सब कुछ एक-सा बीत रहा है, एक रस और एक रंग।"[२] रानी के इस वक्तव्य से उसकी मनोदशा का सूक्ष्म चित्रण होता है। उसका मन अब इतना दुःखी बन गया है कि उसपर किसी भी ऋतू का कोई परिणाम नहीं होता है। दृढ़ता से कर्तव्य का पालन कर खुद पति को राज्य की प्रतिष्ठा के लिए दूसरी शादी करने के लिए कहनेवाली रानी एक नारी होने से अपने मन की भावनाओं को छिपा नहीं पाती है। सुकेशी के माध्यम से जब बड़ी रानी हंसाबाई के प्रति राणा लक्षसिंह के अनुराग की झलक पाती है तो नाटककार की मनोवैज्ञानिक दृष्टि का पता चलता है और बड़ी रानी की व्यथा मन को छु जाती है।

"उड़ान" में नायिका माया का विद्रोही नारी का रूप दिखाने पर भी उसके मन की भावनात्मक स्थिति दिखाने में लेखक पीछे नहीं रहा है। शुरू में काफीले से अलग होनेपर अपने साथी मदन के बिछडने के बाद अकेली असहाय भटकते हुए वह रमेश और शंकर के कैम्प में आसरा लेती है। मदन नाहुँग नदी की लहरों में बह गया है। उसके जिंदा होने का पता भी माया को नहीं है। उसे ढूँढते हुए उसकी याद मे बार-बार -

"आँसुओं से आज भीगा प्यार मेरा,
मिट गया सुख का सजा संसार मेरा।"[३] यही गाना गाते हुए भटकती है। उसने मदन के साथ जीने के सजाये हुए सारे सपने मीट गये है। वह मदन को ढूँढते हुए रमेश और शंकर से बीमार अवस्था मे मिलती है। जब भावुक हृदय का रमेश उसके गाने के बारे में पूछता है तो माया उसे कहती है, "गाना! अपनी थकी हुई शक्तियों को बिखरने से बचाने के लिए, मैं जीने के अन्तिम प्रयास में गा रही थी। कई दिनों से मैं इसी गीत के सहारे चली आ रही हूँ। जब मेरे अंग थक जाते हैं, जीवनी-शक्ति बुझती-सी प्रतीत होती है, मैं यहाँ गीत गाने लगती हूँ। इसे गाते-गाते भूली-बिसरी, बिखरी-धुँधली

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क जय-पराजय पृ - ९२
२. -वही- पृ - ९२
३. उपेंद्रनाथ अश्क उड़ान पृ - ११०

यादे अतीत की गहन गुफाओं से निकल, मेरे सामने आ जाती हैं। उन्हीं में खोकर मैं अपनी सारी थकान भूल जाती हूँ और यह अजीब बात है कि जब मैं एक-दो बार यह गीत गा चुकती हूँ, तो चलने योग्य हो जाती हूँ।"[१] अपने बीते हुए दिनों को याद कर वह अपने आप में एक शक्ति निर्माण करती है ताकि उन्हीं यादों पर जीने का साहस उसमें निर्माण हो। वह गीत उसकी जीवन कहानी को कहता है। रंगुन की बमबारी में उसका परिवार नष्ट हो गया था। उस दुःख को सहकर उसने राह में मिले मदन के साथ जीने के सपने सजाये थे पर उसके भी बिछड़ने के बाद उसे सब कुछ विरान सा लगता है। वह रमेश से कहती है "मैंने खण्डहरों पर नये महल बनाये थे, पर उन्हें फिर खण्डहर बनते देर नहीं लगी। यह गीत उन्ही खण्डहरों की कहानी कहता है। इसे गाते-गाते मेरे टूटे हुए महल नये सिरे से बन-बनकर मेरे सामने आने लगते हैं, मन को एक अजीब-सी तसल्ली मिल जाती है।"[२]

माया मुसीबत के ये दिन मदन के इंतजार में काटती है। मदन एक दिन उसे ढूँढते-ढूँढते वहाँ आ भी जाता है परंतु माया को शंकर और रमेश के साथ देखकर उसके मन में संदेह निर्माण होता है। वह माया को अपने साथ लने से इन्कार करने लगता है तो माया उसे कहती है "तुम यहाँ न पहुँच जाते, तो मैं न जाने कहाँ-कहाँ ठोकरे खा रही होती। तुम नहीं जानते, मैंने ये दिन किस तरह काँटों की सेज पर बिताये हैं।"[३] वह उसे बार-बार अपने वहाँ ठहरने का कारण बताती है "मैं तुम्हें रात-भर समझाती रही हूँ कि यदि मैं अस्वस्थ और विवश न होती, यदि मुझे तुम्हारी प्रतीक्षा न होती.... तो मैं पल-भर को भी यहाँ न रूकती।"[४] अपने मन में मदन के प्रति बसे हुए प्रेम के लिए बीमार अवस्था में भी उसके आने का पल-पल इंतजार करनेवाली माया की मनोदशा का अश्कजी ने सफल चित्रण किया है।

५.२ <u>नायिका का अहं</u> -

"अंजोदीदी" की कथा अंजो की मानसिक ग्रंथी के आधार पर मानसिक

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क उड़ान पृ - ११४
२. - वही - पृ - १२२
३. - वही - पृ - १४४
४. - वही - पृ - १४५

घटनाओं से संबंधित है। मनोवैज्ञानिक स्तर पर यह विचारों के दमन और प्रतिक्रियाओं के संघर्ष की कहानी है। नायिका अंजो के व्यक्तित्व में जो दमन और सनक की मनोवृत्ति है, उसका संबंध उसके अहं से है। वह टूट सकती है, लेकिन झूक नहीं सकती और न हार मान सकती है। पतले-छरहरे शरीर की दुर्बल नसोवाली इस नारी का हटीला अहं उसके माथे की सदा तनी रहनेवाली नसों से ही दिखाई देता है। उसे इस बात का गर्व है कि उसके संपर्क में आनेवाले सभी लोगों को वह अपने मतानुसार साँचे में ढालती है। पति-पुत्र तथा नौकरों को भी वह समयानुसार उठने-बैठने, खाने-सोने पर मजबूर कर देती हैं। बच्चे का खेलने और पढ़ने का समय भी उसने तय कर रखा है। पति ने अंजो के कहने के नुसार छः वर्ष से चाट नहीं खाया है। उसकी सहेली अन्नो उसके पति के बारे में पूछती है कि "जीजाजी को तो बड़ा बुरा लगता होगा यों बँधना ?"[१] तब अंजो बडे अहं से उसे कहती है "बुरा! बडे सिटपिटाये थे पहले-पहल,पर मैं ले ही आयी अपने ढब पर।"[२] उसमें अहं इतना है कि वह सबको बदलना चाहती है।

अपने अहं की रक्षा के लिए वह सब-कुछ कर सकती है। भूख-हड़ताल कर सकती है, रूठकर पीहर जा सकती है इतनाही नहीं, अपनी जिन्दगी का बलिदान भी दे सकती है। वकील साहब की शराब पीने की आदत उसके अहं को सबसे बड़ी चुनौती थी। इस चुनौती से वह लड़ती है। जब उसे अपने हारने का आभास मिल जाता है तो वह खुद के आत्मविनाश से अपने उद्देश्य को पूरा करना चाहती है, जिसे जीवित रहकर वह न कर सकी थी। आगे अंजो के जाने के बाद उसका बेटा नीरज अपनी पत्नी ओमी से कहता है "....और मैं कहता हूँ ममी स्वयं ब्रेक थी। जब तक वे जीवित रहीं, उन्होंने इस घर के जीवन पर ब्रेक लगा रखी - उसे स्वतन्त्रता से बढ़ने-फूलने नहीं दिया और जब मर गयी तो ब्रेक लगाती गयी।"[३]

अपने अहं के कारण वह आत्महत्या तो कर लेती है परंतु मरते वक्त अन्नो से कह जाती है कि - "घोषणा कर देना कि फिट ही में अंजो की जान निकल गयी और

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क अंजोदीदी पृ - ५७
२. -वही- पृ - ५८
३. -वही- पृ - १२९

अपने जीजाजी को शर्म दिलाना कि देखिए आपकी शराबनोशी का क्या दुष्परिणाम निकला.....।"[१]

जिस वक्त अंजो के भाई श्रीपत को पता चलता है कि अंजो ने जहर खाकर जान दे दी है तब वह कहता है "फिट उसको आपकी शराबनोशी पर न आता तो किसी और बात पर आता। वह कमजोर नसों की मॉर्बिड स्त्री थी।"[२] अंजो ऐसी नायिका है जो अपने अहं के लिए खुद को समाप्त करती है। मरने से पूर्व अपने प्रतिरूप में वह अपनी बहू ओमी को छोड जाती है। अंजली के मन में जीवन को नियंत्रित एवं अनुशासित करनेवाली मनोवृत्ति संस्कारगत है। यह प्रकृति उसे गोद लेनेवाले नानाजी से विरासत में मिली है। डॉ.गणेशदत्त गौड़ के नुसार "जिस प्रकार अंजली ने स्वयं इस प्रवृत्ति को फ्राइडियन आनुवंशिक पूर्व प्रवृत्ति (हेरेडिटरी प्रेडिस्पोजिशन) के सिद्धांतानुसार प्राप्त किया है। उसीप्रकार ओमी ने भी इसे पाया है। अर्थात अंजली ने इस प्रवृत्ति को अपने नानाजी से और ओमी ने अंजली से उपलब्ध किया है।"[३]

अंजोदीदी में अश्क ने आभिजात वर्ग के पारिवारिक प्रतिशोध, काम-विकृति या स्वच्छंद प्रवाह आदि कुण्ठाओं को मान्यता नहीं दी बल्कि इसमें आनुवंशिक चारित्रिक मनोवृत्तियों और ग्रंथियों के मनोवैज्ञानिक पहलू को चित्रित किया है।

५.३ अतृप्त काम से निराश और बेचैन नायिका -

"भँवर" की नायिका प्रतिभा उक्ताहट-घुटन से ऊबी हुई लगती है। उसकी इस निराशा का कारण उसके पहले प्रेम की असफलता है। उसके मन में प्रो.नीलाभ के प्रति प्रथम प्रेम की असफलता की ग्रंथी बनी है। यह निराशा-ग्रंथी उसे बार-बार साधारण जीवन से भाग-निकलने के लिए मजबुर कर देती है। प्रथम प्रेम में असफल प्रतिभा द्विगुणे

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क अंजोदीदी पृ - १४७-४८
२. - वही - पृ - १६७
३. डॉ.गणेशदत्त गौड़ आधुनिक हिन्दी नाटकों का मनोविज्ञान पृ - २४०

वेग से सुरेश से शादी तो करती है परंतु जल्दही उससे उकताकर अलग हो जाती है। उसके मन मे प्रथम प्रेम के असफलता की ग्रन्थी दूसरे व्यक्ति के साथ अपना जीवन नहीं निभा सकती।

प्रतिभा के प्रभावशाली व्यक्तित्व की पुरूष तो क्या स्त्रियाँ भी तारीफ करते नहीं थकती। उसे जीवन की प्रत्येक सुख-सुविधा होने पर भी वह जीवन से अशान्त, असंतुष्ट है। उसकी इस नैराश्य, अशान्त भावना का कारण यौनविकृति है। नारी हृदय की सहज यौन-वृत्ति को वह अस्वीकार करती है। उसी यौनभावना का अस्वीकार उसे अतृप्त और कुण्ठाग्रस्त बनाकर निराश और बेचैन करता रहता है।

प्रो.ज्ञान और प्रतिभा का संवाद प्रेम और वासना की सच्चाई को प्रत्यक्षतः सामने लाता है।

<u>प्रो.ज्ञान</u> - "फ्रॉयड कहता है - पवित्र प्रेम महज कपोल कल्पना है। हर प्रेमी अपने हृदय की किसी गहन गुफा में यौन भावना को छिपाये होता है। लेकिन मेरा खयाल है कि स्थायी प्रेम उतना शारीरिक नहीं होता जितना आध्यात्मिक।

<u>प्रतिभा</u> - स्थायी प्रेम अतृप्ति का दूसरा नाम है।

<u>प्रो.ज्ञान</u> - आप ठीक कहती है कई बार स्थायी प्रेम अतृप्ति के सिवा कुछ नहीं होता। आदमी अपने प्रेमी के साथ अपनी यौन-भावना को तृप्त नहीं कर पाता और जिन्दगी भर उस अतृप्ति को आग में जलता रहता है। समझाता है कि उसे अपने प्रिय से अमर, अनन्त, कभी न कम होनेवाला, न मरनेवाला पवित्र प्रेम है।

<u>प्रतिभा</u> - हालाँकि उसके अन्तर में लगातार सुलगनेवाली चीज प्रेम नहीं, बल्कि सेक्स की वह सुलगती चिनगारी होती है, जो कभी धधक कर ज्वाला न बनी।"[१]

उपर्युक्त संवादों से प्रतिभा की प्रेमवासना की आन्तरिकता का परिचय मिलता है। वह अतृप्त काम से निराश और बेचैन नजर आती है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क भँवर पृ - ७०-७१

५.४ <u>कुण्ठाग्रस्त नायिका</u> -

"भँवर" की प्रतिभा प्रेम में असफल होनेपर उसके सम्पर्क में आनेवाले प्रत्येक पुरूष को किसी न किसी दृष्टि से अपूर्ण समझती है। उसकी दृष्टि से किसी में बुद्धि होती है तो सौंदर्य नहीं और सौंदर्य होता है तो बुद्धि नहीं। इसी असंतुलन के भँवर में फँसी हुई प्रतिभा किसी भी पुरूष के अस्तित्व पर दृष्टि नहीं टिका पाती। प्रतिमा नीहार से उसके बारे में कहती है "जिस किसी से भी मिलती है, वही उनके गुण गाने लगता है उसे मजबूर कर देती हैं कि वह उन्हीं के आस-पास मँडलाये। और वे पागल, समझते हैं, वे उन्हें पसन्द करती हैं,......हालाँकी वे उनसे खेलती हैं - जैसे बिल्ली चूहे से।"[१]

प्रतिभा को असाधारणता चाहिए जो प्रो.नीलाभ है परंतु उसे प्राप्त करने में वह असमर्थ रही हैं। परिणामस्वरूप वह आत्मवंचना के रेगिस्तान में भटकती है और अतृप्त, प्यासी ग्रंथियों स ग्रसित कुण्ठित हो जाती है।

"कैद" की नायिका अप्पी की निराशा और घुटन के मूल में लेखक ने स्त्री-पुरूष के अनियंत्रित मनोवेग और उनके अवरोध का सांकेतिक चित्रण किया है। स्त्री-पुरूष के सहज सम्बन्धों में आनेवाली उलझनमय ग्रन्थियों के कारण उत्पन्न मनोविकार का चित्रण अप्पी के द्वारा होता है।

प्राणनाथ के साथ शादी करके अप्पी अपने पूर्व प्रेमी दिलीप को भूला नहीं पाती। उसका जीवन उसे कैद सा लगने लगता है। सामाजिक बंधनों को तोड़कर जीने का साहस उसमें नहीं है। पति के साथ समझौता कर जीनेवाली अप्पी हमेशा उदास और बीमार रहती है। पेट-दर्द, कमर-दर्द, सर-दर्द किसी न किसी दर्द से वह हमेशा परेशान रहती है। दिलीप अखनूर में अप्पी के यहाँ आनेपर पुरानी बातों को याद करता है परंतु उसे अप्पी अपने संसार में सुखी नहीं दिखाई देती। वह अपनी घुटन को दिलीप के सामने प्रकट करती है "मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है जैसे यह अखनूर मेरा काला पानी है और मै यहाँ आजीवन कैद कर दी गयी हूँ।"[२] जम्मू से कुछ ही दूरी पर बसे अखनूर की प्राकृतिक सुंदरता, प्यार करनेवाला पति और दो छोटे बच्चों के साथ भी अप्पी खुश नहीं

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क भँवर पृ - ९५
२. उपेंद्रनाथ अश्क कैद पृ - ७२

है। उसे अखनूर काले पानी की तरह लगता है। वह इतनी निराश है कि उसे अपना घर भी कैद सा लगता है। वह दिलीप से कहती है "किंगकाँग.....तुम्हें याद है न, हम एक बार "किंगकाँग" फिल्म देखने गये थे। मैं उस लड़की को नहीं भूल सकी, जिसे किंगकाँग उठाकर ले गया था। वह मुक्त हो गयी थी। पर मै......।"[१] यहाँ यह स्पष्ट होता है कि प्राणनाथ उस वनमानस का प्रतीक है जिसने अप्पी जैसी सुन्दर लड़की को कैद कर रखा है। अप्पी का यह वक्तव्य उसके जीवन की विषमता का सांकेतिक चित्र है। फिल्म की लड़की तो छूट गयी थी पर अप्पी को अपना पूरा जीवन इसी कैद मे गुजारना पडेगा यह मालूम है। अपने सपनों के देवता से दूर घुट घुटकर जीवन जीनेवाली अप्पी अपनी अवस्था प्रकट करते हुए दिलीप से कहती है "तुम कहीं गर्मियों में आते तो चनाब की बहार देखते। सोया-खोया, अफ़ीमी-सा यह दिखायी नहीं देता उन दिनों। हजार फनोंवाले शेष-नाग की तरह फुफकारता हुआ बहता है।"[२] यहाँ अप्पी कहना चाहती है मेरे जीवन में जो उल्लास दिखाई दे रहा है वह सिर्फ तुम्हारे आने के कारण ही है। जीवन के बाकी दिनों में मेरी जो हालत होती है उसका वास्तविक रूप तुम नहीं जान सकते।

विवाहपूर्व दिलीप को चाहनेवाली अप्पी प्राणनाथ से शादी होने के बाद भी उसे भूला नहीं पाती है। उसका दिलीप के साथ देखा सुनहरा सपना टूट जाता है। काम प्रवृत्ति की मनमाँगी मुराद को सामाजिक व्यवस्था पूरा नहीं होने देती। अपने प्रिय साथी दिलीप से अतृप्त कामेच्छा के कारण वह मनोग्रस्त दिखाई देती है। मानसिक व्यग्रता के परिणामस्वरूप वह किसी न किसी शारीरिक रोग से घिरी रहती है। उसमें संयम ऊँचे दर्जे का है। दिलीप के अखनूर आने के बाद वह अपनी घूटन और निराशा को उसके सामने प्रकट तो करती है परंतु अपनी सीमा का उल्लंघन नहीं करती है। अप्पी कुण्ठा का शिकार है। उसकी आत्मभर्त्सना ने स्वयं अपने आपको मानसिक व्याधियों का घर बना डाला है। जिससे उसका शारीरिक स्वास्थ्य भी खराब हो जाता है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क   कैद   पृ - ७४

२. -वही-   पृ - ७१

५.५ निष्कर्ष -

अश्क के नाटकों में मध्यवर्गीय समाज का चित्रण होने से उनके कुछ नाटकों की नायिकाएँ सामाजिक बंधनों को माननेवाली और नैतिकता का पालन करनेवाली हैं, परिणामस्वरूप मन के विरोध में निर्माण होनेवाली परिस्थिति से उनका जीवन निराशाग्रस्त होता है। जब मन में उत्पन्न भावनाओं का दमन करना पड़ता है तब उससे जीवन अशांत बनता है। आज मध्यवर्गीय समाज में यह चित्र हम देखते हैं। "कैद" की अप्पी का जीवन इसी कारण अशान्त बनता है। अश्क की उच्चमध्यवर्ग की नायिकाओं में अहं और कुण्ठा दिखाई देती है। "अंजोदीदी" नाटक की अंजों में नियंत्रित एवं अनुशासित करनेवाली मनोवृत्ति दिखाई देती है। "भँवर" की प्रतिभा प्रथम प्रेम में असफल होने से अतृप्त, प्यासी और ग्रंथियों से कुण्ठित हो जाती है। अश्क ने अपने नाटकों में मनोविज्ञान को केंद्रबिंदु तो नहीं माना है। पर उनके कुछ नाटकों की नायिकाओं की मनोदशा का जो सफल चित्रण हुआ है वह अनायास आ जाने के कारण सहजता से परिपूर्ण बन पड़ा है।

-०-०-०-०-